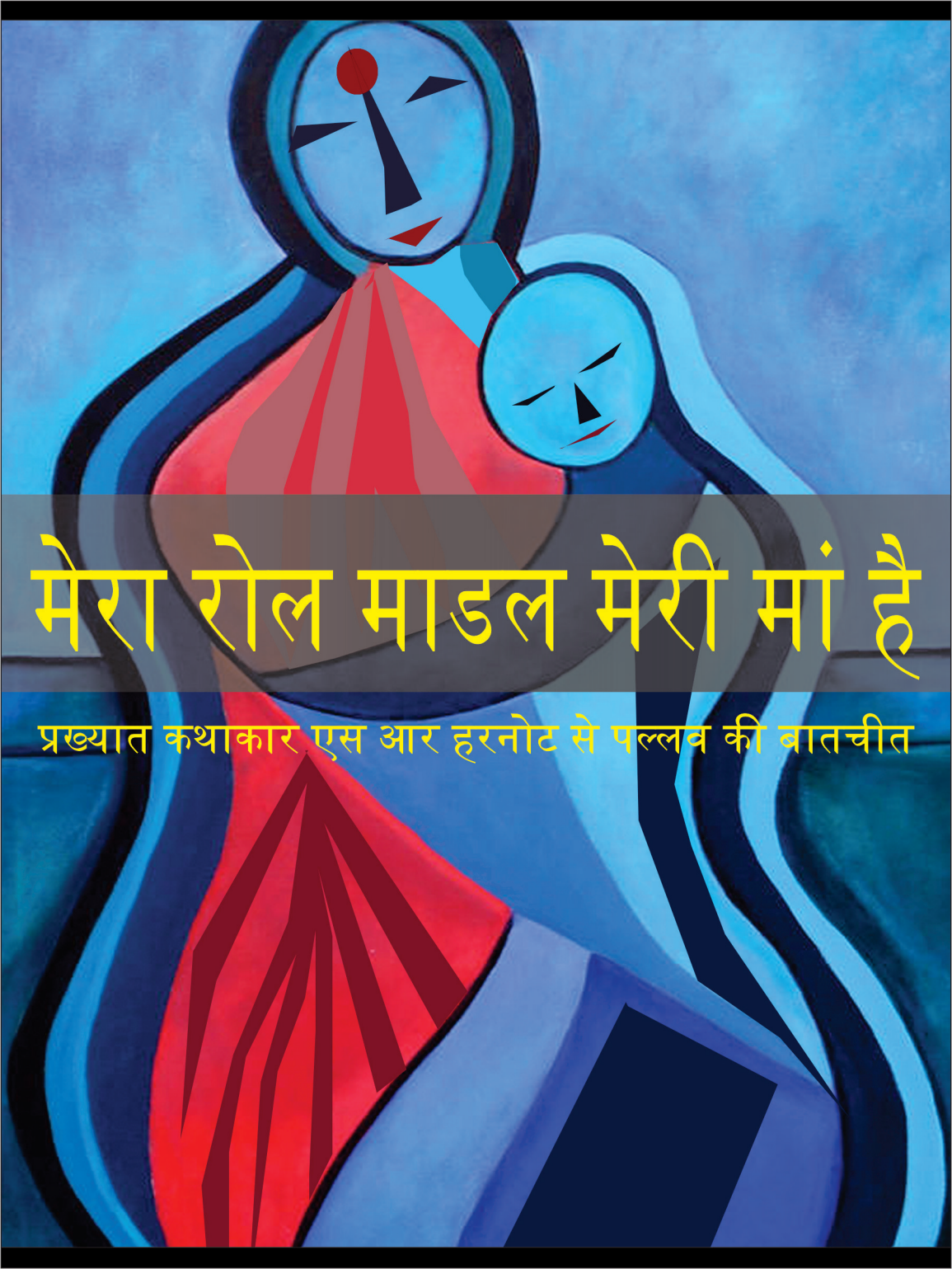

मेरा रोल माडल मेरी मां है

प्रख्यात कथाकार एस आर हरनोट से पल्लव की बातचीत

मेरा रोल माडल मेरी मां है

प्रख्यात कथाकार एस आर हरनोट से पल्लव की बातचीत

एस.आर.हरनोट हिन्दी के उन कथाकारों में हैं जिन्होंने अपने लेखन में प्रेमचन्द की बताई राह का अनुसरण करते हुए भी कहानी को नया रंग और रूप दिया। शिमला में रहने वाले हरनोट पेशे से पर्यटन निगम में प्रशासनिक पद पर कार्यरत हैं। उनके अब तक 6 कहानी संग्रह- पंजा, आकाशबेल, पीठ पर पहाड़, दारोश तथा अन्य कहानियां, जीनकाठी तथा अन्य कहानियां, मिट्टी के लोग तथा अन्य कहानियां और एक उपन्यास- हिडिम्ब सहित हिमाचल के इतिहास, संस्कृति और यात्राओं पर पांच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। अंग्रेजी में माफिया शीर्षक से उनकी 14 अनुदित कहानियों का एक संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है। हरनोट को लेखन के लिए अन्तरराष्ट्रीय इन्दु शर्मा कथा सम्मान, पाखी पत्रिका का जनप्रिय लेखक सम्मान, हिमाचल राज्य अकादमी पुरस्कार तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा क्रिएटिव न्यूज फाउंडेशन एवार्ड, हिमाचल प्रदेश राजकीय अध्यापक संघ द्वारा श्रेष्ठ साहित्यकार सम्मान, अखिल भारतीय भारतेंदु हरिशचंद पुरस्कार और हिमाचल गौरव सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। प्रस्तुत है उनसे बातचीत-

आप दलित लेखक के रूप में अपने को पहचाने जाने से तीखा इनकार क्यों करते हैं? जबकि हमारे दौर में यह बड़ा विमर्श है।

पल्लव जी पहले तो मैं यह विनम्रता से कहना चाहता हूं कि मैं दलित लेखन और दलित लेखकों का मन से सम्मान करता हूं। वह इसलिए कि मैं एक बेहद गरीब दलित किसान परिवार से हूं और रोजी-रोटी के लिए बराबर संघर्ष करना पड़ा है। इस भाग-दौड़ में हमेशा जीने और सम्मान से जीवन व्यतीत करने की लड़ाई रही है जिससे मन में पढ़ने-लिखने की बेहद इच्छा तो बनी रही पर ये दोनों चीजें कभी सिलसिले से नहीं हो पाई। .....मेरे लिए पिछले कई सालों से अर्थात जब से दलित विमर्श शुरू हुआ है यह असमंजस बना रहा है कि क्या दलित जाति का व्यक्ति ही दलित लेखक है। और यदि फिर उसका काम बहुविध है तो उसे आप किस श्रेणी में रखेंगे। दलित विमर्श एक व्यापक संदर्भ और विषय हैं जो एक दायरे में लेखन से कहीं ऊपर है। मैं जिस पहाडी समाज या दूसरे समाज का हिस्सा हूं वहां दलित विमर्श के साथ कई ऐसी दूसरी चीजें हैं जो अनदेखी नहीं की जा सकती। उसमें सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक भष्टाचार हैं, शोषण हैं, प्रदूषण है, पर्यावरण को बचाने की समस्याएं हैं, जिसका शिकार हर वर्ग हो रहा है। मैं साहित्य को जाति के आधार पर बांटने के पक्ष में इसलिए नहीं हूं कि जब आप अपने को इस दायरे में